DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU-Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part – III
Sub. – Sanskrit
Paper – VII
Short Notes

5×4 = 20 Marks.

अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण–

11. दृष्टान्त अलङ्कार

दो वाक्यों में उपमान और उपमेय का धर्मसहित यदि बिम्ब-प्रतिबिम्बभाव हो तो उसे दृष्टान्त अलङ्कार कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार इसका लक्षण इस प्रकार है–

"दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम्।"

तात्पर्य यह है कि सधर्म वस्तुओं (उपमान और उपमेय) के प्रतिबिम्बन को दृष्टान्त अलंकार कहते हैं। प्रतिबिम्बन का अर्थ होता है – 'प्रणिधानेन गम्यसाम्यत्वम्' - अर्थात् दोनों के सादृश्य की प्रतीति अवधान से होती है और उसे प्रतिबिम्ब कहते हैं। यह अवधान-साम्य के शब्दों में व्यक्त नहीं होने के कारण उत्पन्न होता है। प्रतिवस्तूपमा नामक अलङ्कार में एक ही धर्म का प्रकारान्तर से निर्देश होता है। उदाहरणार्थ–

" नैतल्लघ्वपि भूयस्या वचो वाचाऽतिशय्यते।
इन्धनौघधगप्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम्॥" (माघ 2/23)

यहाँ सूर्यादि के तेज के प्रभाव की भाँति श्री कृष्ण की अतिसंक्षिप्त वाणी की अर्थवत्ता अलघुत्व का कारण है, अतः समानधर्म बिम्बतया यहाँ दृष्टान्त अलङ्कार है।

——— 0 ———